International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 33-36

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 33-36
www.allresearchjournal.com
Received: 25-08-2020
Accepted: 27-09-2020

प्रमोद कुमार सिंह
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ति.माँ.भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रमोद कुमार सिंह
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ति.माँ.भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटकक : दशा–दिशा

प्रमोद कुमार सिंह

प्रस्तावना

संघर्षमय संसारक अशान्त एवं क्लेशमय वातावरणसँ त्रस्त मानवकेँ एक टा दिव्य भाव लोकमे लऽ जाय, अलौकिक आनन्दक अनुभव करायब कोनो कलाक उद्देश्य मानल गेल अछि। कलाक एहि उद्देश्यक पूर्ति तखनहि भऽ पबैत अछि जखन ओ कला प्रेमी रसिकजनकेँ अपना संग तादात्य स्थापित कराय लैत अछि। काव्य कलाक दृश्य रूप 'नाटक' एहने विद्या अछि, जे साधारणतः चाक्षुष प्रत्यक्ष होयबाक कारणेँ दर्शकक संग अत्यन्त सहजतासँ तादात्य स्थापित कऽ लैत अछि आओर तेँ अपन उद्देश्यक पूर्ति सेहो अनायासे कऽ लैत अछि।

आधुनिक भारतीय भाषा मध्य मैथिली–नाट्य–साहित्य–संपदा अत्यन्त समृद्ध अछि। अति प्राचीन कालहिसँ मैथिली नाट्य साहित्यक परम्परा अविच्छिन्न रूपसँ वर्त्तमान काल धरि तीव्र गतिसँ प्रवाहमान भऽ रहल अछि। काव्यक दू गोट भेद होइत अछि– श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य। नाटक दृश्य काव्य अछि एवं एकर मंचन लोकक समक्ष होइते अछि। नाटक मध्य लोकवृत्तिक अनुकरण कयल जाइत अछि संगहि अनुकरणक माध्यम चारू प्रकारक अभिनय (आंगिक, वाचिक, तात्विक एवं आहार्य)सँ होइत अछि। सबसँ बढ़ि एहिमे प्रायोगिक मूल्यक संग–संग साहित्यिक मूल्य सेहो दृष्टिगोचर होइछ। संस्कृत साहित्यक सुदीर्घ नाट्य परम्परा एवं नाट्य शास्त्रीय ग्रन्थ एकर प्रमाण अछि। नाटक शब्दक उत्पत्ति संस्कृतक 'नट' धातुसँ भेल अछि जकर अर्थ होइत अछि 'नाँचब'।

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि काल विभाजन करैत मैथिली साहित्यकेँ तीन काल खण्डमे विभक्त कयने छथि– आदि काल, मध्य काल एवं आधुनिक काल। मध्य कालकेँ इतिहासकार लोकनि नाट्य कालक संज्ञा देलनि अछि एवं एहि कालक नाटककेँ कीर्तनियाँ नाटक कहलनि अछि। संस्कृत साहित्यक विद्वान संस्कृत साहित्यसँ पूर्ण प्रभावित रहबाक कारणेँ ओहि समयक पंडित लोकनि सेहो मिथिला मध्य संस्कृत, प्राकृत एवं मैथिलीमे गीतक सन्निवेश कऽ रचना कयल जाहि मध्य कथावस्तु पौराणिक रहैत छल। आधुनिक कालकेँ स्वातंत्र्योत्तर काल सेहो कहल जा सकैत अछि।

नाट्य रचनाक परम्परा भनहि मध्य कालसँ प्रारम्भ होइत हो मुदा मैथिली नाटकक श्री गणेश कही वा विकास यात्राक आरम्भ कही आधुनिकेँ कालमे आबि भेल अछि कारण मिथिलामे संस्कृत साहित्यक प्रचार–प्रसार छल, एहि ठामक पंडित वर्गकेँ भारत वर्षमे विकसित होइत आन–आन भाषाकेँ स्वरूपक परिचय नहि छलनि, ताहूमे अंग्रेजक कारण अंग्रेजीयेक प्रचार–प्रसारक कारणेँ आन–आन क्षेत्रक विद्वान लोकनि अपन क्षेत्रमे आधुनिक अनबाक छल करय लगलाह, मुदा मिथिलाक पंडित लोकनि एहिसँ कोसो दूर छलाह। नाटकक आधुनिक स्वरूप एवं रंगमंच दिस हुनका लोकनिक ध्यान तखन गेलनि जखन ओ लोकनि रामलीलाक अभिनय देखलनि आ एहि प्रक्रियामे गति देबाक कार्य कयलक पारसी थियेटर।

परिवर्तन जीवनक शाश्वत नियम थिक। सामाजिक जीवनसँ साहित्यक घनिष्ट सम्बन्ध छैक ओ परिवर्तन जीवनक शाश्वत सत्य जाहिमे हम अपन बदलैत स्वरूपकेँ देखैत छी आ एहिमे नाटक पूर्ण सहयोग दैत अछि कारण नाटक दृश्य काव्य अछि तेँ एकर प्रभाव समाजक विभिन्न वर्ग एवं समुदायपर पड़ब आवश्यकेँ। मैथिलीमे नाट्य रचनाक दृष्टिएँ स्वातंत्र्योत्तर कालमे आबि विषय–वस्तुमे नवीनता पर्याप्त मात्रामे देखबामे अबैत अछि। एही कालमे आबि मैथिली नाटक प्राचीन पारम्परिक नाटकक चाङुरसँ मुक्त भऽ अपन स्वतंत्र स्वरूपकेँ विकसित करबामे सक्षम भेल। नाट्य–तत्त्वक सभ अनिवार्यताक अछैत प्राचीन नाटक ओ स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटकमे पृथ्वी ओ आकाशक अन्तर भऽ गेल अछि।

आधुनिक नाटकक सम्बन्धमे मैथिलीक प्रयोगधर्मी नाटककार सुधांशु शेखर चौधरीक मन्तव्य छनि– "नाटककेँ जीवनसँ जोड़बाक प्रयत्नस्वरूप जे वस्तु जन्म ग्रहण कयलक अछि सएह थिक आधुनिक नाटक। आधुनिक नाटकक प्रदर्शन स्थलमे आब लोक एहि हेतु नहि जुटैत अछि जे ओ जीवनसँ बाहरक वस्तु देखत, अतिशय नाटकीय ओ चमत्कारपूर्ण घटनासँ अपनाकेँ विभोर करत। वस्तुतः लोक

आब नाटक देखैत नहि अछि, नाटकमे अपनाकेँ ताकल जाइत अछि। एहि स्थितिकेँ दोसर ढंगसँ कहल जा सकैत अछि जे प्रेक्षक आब नाटक भोगैत अछि, आब ओ नाटकक क्षण जीबैत अछि। आधुनिक नाटकक परिभाषा एहिसँ भिन्न आर की भऽ सकैत अछि।"[1]

प्राचीन समयमे अभिनयक क्रममे जे चारि वस्तुक व्याख्या भेटैत अछि से यद्यपि आइयो ओहिनाक–ओहिना व्याख्यायित कयल जा सकैत अछि किन्तु जीवनक सभ क्षेत्रमे जेना जटिलता ओ गहनताक सन्निवेश होइत चल गेल अछि तहिना अभिनयक ओहि चारू तत्त्वमे महान अन्तर आबि गेल अछि। आचार्य लोकनि अभिनयक ओहि चारू तत्त्वक विभाजन आंगिक, वाचिक, आहार्य ओ सात्त्विक रूपमे कयने छथि अर्थात् अभिनय प्रदर्शित करैत काल अंग–संचालन करब, वचन द्वारा अपन अभिप्राय व्यक्त करब, पात्रताक अनुसार अपन बगय–बानि बनओने रहब आ स्थितिक अनुसार भाव–मुद्रा देखायब अनिवार्य होइत अछि। आइयो अभिनायक प्रदर्शनमे एहि चारू तत्त्वक अनिवार्यताकेँ अस्वीकृत नहि कयल जा सकैत अछि किन्तु कला ओ साहित्यक क्षेत्रमे जेना–जेना यथार्थबोधक प्रतिष्ठा होइत चलि गेल अछि आ यथार्थता, स्वाभाविकता ओ विश्वसनीयतापर भर देल जाइत रहल अछि, अभिनयक ओहि चारू तत्त्वमे गहनता ओ जटिलता पराकाष्ठापर पहुँचि रहल अछि। तात्पर्य, पूर्वक समयमे अभिनय ओरापित लगैत छल, अंग संचालनमे, बातचीतमे, हँसब–कानबमे आ वस्त्र धारणमे कृत्रिमता लक्षित होइत छल, आब तकर परिह्यास भऽ गेल अछि अर्थात् आधुनिक नाटकमे पूर्व जकाँ केवल मनोरंजने टा नहि रहैत अछि, अपन प्रत्यक्ष जीवनक थाह लैत अछि। ई ठीक जे प्राचीन आचार्य लोकनि अभिनयकेँ अनुकृति कहने छथि आ आइयो नाटकक क्रममे अनुकृतिये कयल जाइत अछि किन्तु पूर्वक नाटकमे गढ़ल आदर्शक साँचमे ढारल पात्रक अनुकृति रहैत छल जाहिमे स्वाभाविकताक संभावना कम रहैत छलैक मुदा सम्प्रतिक नाटकमे जीबैत आ भोगैत लोकक जटिल जीवनक अनुकृति कयल जाइत अछि। नाट्य–कलाक एक टा इएह बिन्दु अछि जे प्राचीन नाटकसँ स्वातंत्र्योत्तर नाटककेँ सर्वथा फराक कऽ दैत अछि।

आधुनिक अथवा स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटकक श्री गणेशक सम्बन्धमे डॉ प्रताप नारायण झा लिखलन्हि अछि– "मध्यकालीन नाटक पर जन नाटकक प्रभाव तथा किछु तत्त्वक मिश्रणक फलस्वरूप ओकर रचना एवं अभिनयमे प्राचीन एवं शास्त्रीय परम्पराक मूल तत्त्व निहित रहल। एकर अनुकरण सेहो कयल गेल।

मैथिली नाटकक सम्बन्ध एवं ओकर मूल प्रेरणा स्रोत यैह प्राचीन एवं शास्त्रीय

परम्परा थिक।"[2]

स्वातंत्र्योत्तर नाटकमे अनेक प्रयोग कयल जाइत अछि। सगंहि दृश्य परिवर्तनक विधानमे सेहो शिथिलता आयल अछि। स्वातंत्र्योत्तर नाटकमे स्पष्ट रूपसँ देखबामे अबैत अछि जे ओ युगीन यथार्थ दिस बेसी अपनाकेँ केन्द्रित कयलक अछि। एहि युगक नाटकमे जीवनक जीवंतता एवं गतिशील रूपक चित्रण स्पष्ट रूपेँ भेटैत अछि। स्वातंत्र्योत्तर नाटकमे घटना सभक अनावश्यक संकलन नहि भेटैत अछि किएक तऽ कहल गेल अछि जे नाटक मध्य कथा–वस्तुक सफल विधानेपर नाटकक पूर्ण सफल होयब संभव भऽ पबैत अछि। जे नाटक जतेक तीव्र होयत, जाहि नाटकक कथानक जतेक जटिल होयत, ततवे ओकर कथाक परिवेश छोट होयतैक एवं ततवे कम ओकर दृश्य बदलतैक। स्वातंत्र्योत्तर नाटक सभमे ओहने कथा–वस्तुक समावेश कयल जाइत अछि जकरा देखलासँ मात्र दर्शककेँ ई बुझाइक जे ई घटना हमरहि जीवनसँ सम्बन्धित अछि, कारण जखन कोनो दर्शक द्वारा नाटक देखल जाइत छैक तँ ओकर मानसिक स्थिति ओहि वस्तु–स्थितिसँ प्रेरित भऽ जाइत छैक आ एकर प्रमुख कारण ई भऽ गेल अछि जे आजुक नाटकक विषय–वस्तुक चयन समाजक विभिन्न वर्गक सामान्य जीवनसँ कयल गेल रहैत अछि। आजुक नाटकमे पात्रक चरित्र–चित्रणपर विशेष ध्यान देबाक मुख्य कारण ई अछि जे नाटक मध्य पात्रक संख्या सीमित अथवा कम रहैत अछि। पात्रक संख्या कम रहलासँ नाटककारकेँ ई सुविधा होइत छनि जे ओ पात्रक चरित्रांकन नीक जकाँ कऽ पबैत छथि। पात्रक मनःस्थितिक विश्लेषण पूर्णरूपेण कऽ पबैत छथि आ यैह कारण अछि जे पात्रक चरित्र–चित्रणसँ मानसिक स्थिति चित्रण आधुनिक मानसिक स्थितिक चित्रण आधुनिक नाटकक प्राण बनि गेल अछि। स्वातंत्र्योत्तर नाटकक नायक केओ भऽ सकैत अछि, कोनो वर्गक भऽ सकैत अछि, कोनो जातिक वा वर्णक भऽ सकैत अछि; केहनो चरित्रक लोक भऽ सकैत अछि।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाट्य शिल्पमे कोन तरहक परिवर्तन भेल अछि ताहि प्रसंगमे सुधांशु शेखर चौधरीक विचार छनि– "नाट्य–शिल्पक दृष्टि सँ सेहो महान परिवर्तन भऽ गेल अछि। आधुनिक नाटकमे प्राचीन नाटक जकाँ पाँच सँ लऽ कऽ दस अंक होयब अनिवार्य नहि अछि। वस्तुतः आधुनिक नाटकमे कम सँ कम अंक होइत अछि आ दृश्य परिवर्तनक सेहो पूर्ण ह्रास भेल अछि। जे नाटक जतेक तीव्र होयत, जाहि नाटकक कथ्य जतेक जटिल होयतैक, ततबे ओकर कथाक परिवेश घोट होयतैक, ततबे कम ओकर दृश्य बदलतैक। ईहो भऽ सकैत अछि जे एके अंकमे नाटकक पूर्ण निर्वाह भऽ जाए किन्तु तैं एहन नाटक कँ एकांकीक संज्ञा नहि देल जा सकैत अछि। जे कि नाटक आ एकांकी पृथक–पृथक विधाक रूपमे ग्राह्य भऽ चुकल अछि तैं ओकर नाटय–तत्त्व परिवेशादिमे भिन्नता होयबे करतैक। आधुनिक नाटकक विशेषता ई अछि जे एहिमे कम सँ कम पात्रक प्रयोजन होइत अछि। असलमे पात्रक चरित्र चत्रिण मानसिक स्थितिक निदर्शन आधुनिक नाटकक प्राण बनि गेल अछि आ तैं घटनोक संयोजन एहन कयल जाइत अछि जाहिमे क्षिप्रता ओ गतिशीलता अधिक होइछ।"[3]

नाटकक महत्वपूर्ण तत्त्व अछि संवाद अथवा कथोपकथन। स्वातंत्र्योत्तर नाटक सभमे नाटककार कथोपकथन पर विशेष ध्यान दैत छथि। नाटकमे छोट–छोट एवं सटीक कथोपकथनक माध्यमे विशेष रूपेँ अर्थव्यक्त भाव कँ प्रेषित करैत छथि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी कहैत छथि– "आधुनिक नाटकमे मंचीय मर्यादा ओ स्वाभाविताक आग्रहक कारण धार्मिकताक भावना किंवा कट्टरताक निर्वाहक प्रश्ने नहि उठैत अछि। नाटकक विश्वसनीयताक आगाँ आर सभ भावना गौण पड़ि गेल अछि। जँ कही तँ आधुनिक नाटक कतेक प्राचीन नाट्य–परम्पराक वस्तुकेँ वर्जित कऽ देलक अछि। प्राचीन नाटकमे हास्य सृष्टि करबाक लेल धीरोदात्त नायकक संग विदूषक होइते छलाह किन्तु आधुनिक नाटक कृत्रिम रूपसँ हास्य उत्पन्न करयबाक लक्ष्यसँ एहन पात्र जोड़ब अमान्य कऽ देलक अछि। नृत्य आ गीतकेँ सहजेँ नाटक द्वारा तिरस्कृत कऽ देल गेल अछि। आधुनिक नाटकमे एको टा फालतू पात्रकेँ नै जोड़ल जा सकैत अछि आ नै गोटेको फाजिल वाक्य वा शब्दक अपव्यय कयल जा सकैत अछि। आधुनिक नाटकक वस्तुविधान, मंचविधान आ रंगविधान ततेक सशक्त, ततेक संतुलित, ततेक नियन्त्रित रहैत अछि जे कोनो अंश वा अंगकेँ फलकि जयबाक संभावना कम रहैत अछि।"[4]

आजुक नाटकमे गति अनबाक लेल ओहिमे विज्ञान आ टेक्नोलॉजीक सहयोग लेब अनिवार्य मानल गेल अछि। एहि दुनूक सहयेागसँ नाटककेँ अतिशय प्रभावी बनेबाक संभावना बढ़ैत चलि गेलैक अछि। मंच व्यवस्थामे ध्वनि ओ प्रकाश प्रयोगसँ नाटकक नव तकनीकक विकास भेलैक अछि जे आगाँ चलि ओकर प्राण बनि गेल अछि।

डॉ. जयकान्त मिश्र, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ. दिनेश कुमार झा सहित प्रायः सभ इतिहासकार तथा नाटककार डॉ. प्रेमशंकर सिंह आदि जीवन झाकेँ आधुनिक मैथिली नाटकक प्रवर्त्तक मानैत छथि। डॉ. रामदेव झा लिखने छथि– "एहि पृष्ठभूमिमे कविवर

जीवन झाक नाट्य रचना कतेक महत्वक अछि से सहज अनुमेय। अतः विश्वास कयल जयबाक चाही जे कविवर जीवन झाक रचनाक उद्देश्य छल योजनाबद्ध रूपसँ युगानुरूप नाटकक रचना ओ तकर अभिनय द्वारा मिथिलाक प्रिय भाषा नाट्य परम्परकेँ, रंगमंचकेँ पुनरूज्जीवित कए ओकरा नवीन युगक अनुरूप बनाय जन–जीवनक सन्निकट आनब। ओही योजनाक अनुसार ओ लोक–प्रचलित भाषामे बेराबेरी चारि गोट नाट्य कृतिक रचना कयलनि।"[5]

नाटकक एहि धारामे परिवर्तन होइत अछि नाटककार महेन्द्र मलंगियाक आगमनसँ। ओ एहि वर्ण्य–विषय सभसँ अपनाकेँ पृथक राखि नवीन दृष्टिकोणकेँ ध्यानमे रखैत अपन नाटक मध्य समाजमे उपेक्षित, शोषित, दलितक संग–संग विधवा विवाह, बेरोजगारी आदिकेँ केन्द्र बनाय नाटकक कथा–वस्तुक निर्माण कयल।

साहित्यक अन्य विद्या सदृश मैथिलीक नाट्य विधा सेहो स्वातंत्र्योत्तर कालमे कालोचित परिवर्तनकेँ आत्मसात कयने विविध रूपमे प्रगट भेल अछि। आलोच्यकालक नाटककार लोकनिकेँ एक दिस जँ यूरोपीय नाटककार 'इब्सन' एवं 'शॉ' बुद्धिबादक आधारपर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि जीवनक विविध क्षेत्रमे प्रविष्ट मिथ्या आडम्बर एवं परम्परा पालनक विरोध करबाक प्रेरणा प्रदान कयने छनि तँ दोसर दिस मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादक सिद्धान्त, फ्रायडक मनोविश्लेषण सिद्धान्त तथा अन्यान्य साहित्यकार चिन्तक लोकनिक विचार–धारा सेहो कथ्य एवं शिल्पक क्षेत्रमे नवीन–नवीन आयाम प्रदान कयने छथि आओर एकर संगहि परंपरा सेहो हिनका लोकनिकेँ अपन दृष्टिसँ ओझल नहि होबय देलक अछि। फलतः आलोच्य कालक मैथिली नाट्य सम्पदा कथ्य एवं शिल्पक दृष्टिएँ वैविधमय बनि गेल अछि।

आलोच्यकालीन मैथिली नाट्य साहित्यक विविध रूप जाहि कुशल नाटककार लोकनिक मौलिक कृतिँ गरिमामय बनल अछि, ताहिमे उल्लेखनीय छथि–

सुधांशु 'शेखर' चौधरी

सुधांशु 'शेखर' चौधरी वयःक्रमेँ आ गुण–क्रमे सेहो स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटककारमे अग्रगण्य छथि। ई समसामयिक समस्याकेँ मार्मिक रूपेँ ठाढ़ कए दर्शककेँ सोचबाक हेतु छोड़ि देब हिनक नाटक–लेखनक लक्ष्य रहैत अछि। ई समस्याक समाधानक फेरमे कदाचिते पड़ैत छथि। प्रभावोत्पादनक हेतु अतिरंजना कए यथार्थक हत्या करब ई अपराध बूझैत छथि। हिनक तीन नाटक 'भफाइत चाहक जिनगी', 'लेटाइत आँचर' आ 'पहिल साँझ' क्रमशः बेकारी, दहेज आ पीढ़ीक द्वन्द्व विषयपर अछि। तीनू नाटक एके–एक दृश्यमे समाप्त भेल अछि। लेखकक आग्रह छनि जे नाटक एके अविच्छिन्न काल–खंड आ एके दृश्य–पटलमे सम्पन्न होएबाक चाही। अपने तँ एकर निर्वाह कएने छथि परंतु आजुक नाटककार वा मंचपंडित हुनक एहि कठोर नियमकेँ नहि मानैत छथि। हिनक एक नाटक 'लगक दूरी' अछि जे साहित्यकारक जीवनपर आधारित अछि। सहज स्वभाविक संवाद वाचिकसँ अधिक कायिक प्रयोग, अबाधित गति आ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता एवं संवेदनशीलता हिनक नाटकक उल्लेखनीय गुण अछि।

श्री महेन्द्र मलंगिया

स्वातंत्र्योत्तर नाटकमे एक नव रूप–रंग लए प्रकट भेलाह आ नाट्य–साधनामे अनन्य भावेँ निरत रहलाह अछि। आंचलिक चरित्रकेँ चित्रित करबामे मैथिलीमे ई एखन धरि अद्वितीय छथि। हिनक नाटक 'जुआएल कनकनी' अछि जाहिमे एक घिनाओन परिवार निःसंकोच नग्न कएल गेल अछि। एहिमे सभ पात्रकेँ चरित्र वैयक्तिक छल। दोसर नाटक 'ओकरा आँगनक बारहमासा' अछि जे पुनः एक नव प्रयोग छल जाहिमे बारहमासा गीतक माध्यमसँ मिथिलाक एक दरिद्र किसानक शोषण प्रगाढ करूण रसमे चित्रित कएल गेल अछि आओर एहिमे देखल गेल अछि कि भारतक स्वतंत्र भेलहु उत्तर, सरकार द्वारा समाजवादक बारम्बार उद्घोषणा होएबाक पश्चातो, एहन परिवारक वस्तुस्थिति एखनहुँ धरि ओहने अछि जेहन स्वातन्त्रताक पूर्वमे छल, सम्पन्न उच्च–वर्ग ओ निर्मम सुदखोर द्वारा निम्नवर्गक शोषण ओ अत्याचार, अन्न बिना भूखसँ टटाइत ओ दबाइक बिना मरैत जन समूह जकरा कफनक हेतु दू हाथ वस्त्र नहि नसीब होइत छैक। नाटकक नवम पात्रक ई उक्ति कतेक मार्मिक अछि– "ने ओइ गुबरमिन्टक राजमे ककरो कफन मिललै आ ने एहू गोबरमन्टक राजमे मिलत।"[6] हिनक अन्य नाटक सभ अछि 'लक्ष्मण रेखा खंडित', 'नसबन्दी', 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत', 'कमला कातक राम, लक्ष्मण ओ सीता ', 'काठक लोक' आदि।

नचिकेता

उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' मैथिली मंचकेँ थोड़े समयमे छओ गोट नाटक देलनि – 'आन्दोलन', 'एक छल राजा', 'नाटकक लेल', नायकक नाम जीवन', 'प्रत्यावर्त्तन', 'रामलीला'। हिनक नाट्क सभ सिद्ध करैत अछि जे मैथिली मंचपर सार्वभौमो वस्तु सफलतापूर्वक प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि। एकरा मिथिलांचलक परिवेश–सीमामे बन्हने रहब वांछनीय नहि। ई प्रयोगधर्मी लेखक छथि आ हिनक शिल्पक विशेषता अछि नाटकहुमे अनेक कथोपकथाक जाल बूनल। सभ नाटकमे प्रस्तुतिक नव–नव ढंग अछि।

प्रबोध नारायण सिंह

प्रबोध नारायण सिंह पहिने विद्वान छथि तखन साहित्यकार वा नाटककार। सम्भवतः ई 'प्रेमक रोग' आ 'हाथीक दाँत' दूनू नाटक मंचक प्रेरणासँ लिखलनि। एहिमे

मिथिलाक माटि–पानिक सौरभ ततेक नहि अछि जतेक मैथिल दर्शक अपेक्षा करैत छथि मुदा ई सिद्ध करैत अछि जे मैथिली नाटकक हेतु क्षेत्रीयताक वा आंचलकिताक सीमा बन्धन आब अवांछनीय भए गेल अछि। 'हाथीक दाँत' नेतागिरीक पाखण्डी चरित्रक उद्घाटन करैत अछि।

गोविन्द झा

हिनक नाटक– 'बसात', 'राजा शिव सिंह', 'अन्तिम प्रणाम', 'मोछसंहार' आ 'मिथिलाक प्रतिनिधि' आदि अछि जे स्वातंत्र्योत्तर नाटकक कोटिमे अबैत अछि। 'अंतिम प्रणाम'मे टूटैत गामक प्रति पुरान पीढ़ीक लोकक मोह, मोछ संहारमे मिथिलाक महिलामे सांस्कृतिक चेतना देखाओल गेल अछि।

अरबिन्द 'अक्कू'

अक्कू जीक एखन धरि सोलह गोट नाटक प्रकाशित अछि आ किछू अप्रकाशित सेहो अछि जाहिमे – आगि धधकि रहल छै, तालमुट्ठी, एना कते दिन, पातक मनुक्ख, अन्हार जंगल, धूर्त समागम, अन्तिम सत्य, आतंक, रक्त, के ककर, वाह रे हम वाह रे हमर नाटक, पठुआ कक्का अएला गाम, गुलाब छड़ी, राज्याभिषेक, अलख निरंजन, तेसर घर, झिझिर कोना, फुटानी चौक।

नाटकक एहि धारामे परिवर्तन होइत अछि नाटककार अरबिन्द अक्कूक आगमनसँ। ओ एहि वर्ण्य विषय सभमे अपन नवीन दृष्टिकोणकेँ ध्यानमे रखैत अपन नाटक मध्य समाजमे उपेक्षित, शोषित, दलितक संग–संग बेरोजगारी, धूसखोरी, भ्रष्टाचारी एवं साम्प्रदायिकताक कारणेँ व्याप्त कुरीतिकेँ केन्द्र बनाय नाटकक कथावस्तुक निर्माण कयल गेल अछि।

अक्कू जीक नाटकमे सेहो नव–नव कथ्य एवं शिल्पक प्रयोग भेटैत अछि। प्रायः हिनक नाटक व्यक्ति, परिवार, समाज आ देशक परिप्रेक्ष्यमे लिखल गेल अछि। हिनक नाटक मैथिलीक अन्य नाटककारसँ हटि कए ई अपन नाटककेँ नव स्वरूप आ नवरंग–शिल्पपर उतारलनि अछि।

वस्तुतः समाज मध्य भेल आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितिमे परिवर्तनक कारणे नाटकक विषयवस्तुमे परिवर्तन आयब स्वाभाविके।

"रंगमंचीय नाटकक नवीन प्रयोगशील धारामे नवीन सम्भावनाक संग अरविन्द कुमार झा 'अक्कू'क प्रवेश भेल 'आगि धधकि रहल अछि'क संग। समाजमे बताहक संख्या बढ़ि रहल अछि; 'आगि धधकि रहल अछि'मे नाटककारक प्रश्न अछि– एकर अपराधी के ? नाटककार एकरा हेतु देशक आर्थिक व्यवस्था ओ समाजक रीति–नीतिकेँ दोषी मानैत छथि तथा एहिमे स्वस्थ परिवर्तनक सन्देश दैत छथि।"[7]

अक्कू जी नव नाटक 'आलख निरंजन'मे ई देखयबाक प्रयास कयलनि अछि जे भारतमे सबसँ पिछड़ल बिहार आ बिहारमे मिथिलाचंल अछि किन्तु समय आ सत्ता परिवर्तनक संग ठमकल विकासक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। जाहि स्वभाविक ओ सहजताक संग एकर चित्रांकन कयलनि अछि से सिद्ध करैत अछि जे मैथिलीयोक नाटककार आब एहि दिशामे पूर्ण सजग छथि। ओतहि अक्कूक नाटक तालमुट्ठी, एना कते दिन, आगि धधकि रहल अछि, रक्त, आतंक आदिमे भ्रष्टाचारी, बेरोजगारी, घूसखोरी एवं साम्प्रदायिकताक कारणेँ व्याप्त कुरीतिकेँ देखयबाक सफल प्रयास कयल गेल अछि।

मैथिलीमे कतोक अन्य नाटककार छथि जिनक नाट्य कृतिसँ स्वातंत्र्योत्तर नाट्य साहित्यक भंडार भरल अछि। एहिमे किछु अछि– ईशनाथ झाक मौलिक सामाजिक नाटक 'चीनीक लड्डू', कमलकान्त झाक 'घटकैती', भाग्यनारायण झाक 'मनोरथ', लल्लन प्रसाद ठाकुरक 'मिस्टर नीली काका', 'लौंगिया मिरचाई', विभूति आनन्दक 'समय संकेत', 'आबि गेलै गिरहस', उषा किरण खानक 'फागुन', छत्रानन्द सिंहक नाटक 'सुनू जानकी', विनोद कुमार मिश्र 'बन्धु'क नाटक 'एकटा चिनमा', कमल मोहन चुन्नूक नाटक 'चाङुर', 'नव घर उठे', 'ऑवजेक्सन वी लॉड' एवं आनन्द कुमार झाक 'हठात परिवर्तन' अछि।

निष्कर्षतः इएह देखल जाइछ जे स्वतंत्रतासँ पूर्व आ स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाट्य–शिल्पमे विविध परिवर्तन भऽ गेल अछि जे शनैः–शनैः होइते जा रहल अछि। पहिने प्रख्यात कथानक आ प्रख्यात नायकक चरित्रपर बल देल जाइत छल मुदा आब से बात नहि। आधुनिक नाटकक नायक क्यो भऽ सकैत अछि, कोनो वर्गक भऽ सकैत अछि, कोनो वर्ण आ कोनो जातिक भऽ सकैत अछि, केहनो चरित्रक लोक भऽ सकैत अछि। इएह कारण अछि जे परम्पराशील आलंकारिक भाषाक प्रयोग नहि भऽ कए जनसामान्यक भाषामे संवाद–योजना प्रस्तुत कयल जाइछ। प्राचीन नाटकक अपेक्षा आधुनिक नाट्य–मंचकेँ दृष्टिमे राखि लिखल जाइछ।

संदर्भ

1. पहिल साँझ– सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृ. 8
2. मैथिली नाटकक उद्भव और विकास– लेखनाथ झा, पृ. 69
3. संदर्भ– सुधांशु शेखर चौधरी, पृ. 8.
4. संदर्भ– सुधांशु शेखर चौधरी, पृ. 9.
5. जीवन झा रचनावली– रामदेव झा, पृ. 3
6. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ. 287.
7. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ. 294.